अध्याय-12

नए साम्राज्य एवं राज्य

बिहार दर्शन कार्यक्रम अनतर्गत छात्रों एवं शिक्षकों का एक समूह भ्रमण करते हुए नालन्दा महाविहार पहुँचा। महाविहार को देखते ही छठी कक्षा के छात्र मुकेश के मन में कई सवाल उठने लगे। ''इस महाविहार को बनाने वाले कौन थे ? जब यह बना होगा तो कितना सुन्दर दिखता होगा ? यहाँ कौन–कौन लोग रहते थे और वे क्या करते थे?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

नालन्दा गए छात्रों एवं शिक्षकों का समूह

आप पढ़ चुके हैं कि चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्यों ने सबसे पहले पूरे भारत में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। इसी तरह गुप्त शासकों ने तीसरी शताब्दी में उत्तरी भारत में एक नए राज्य की नींव डाली जो आगे चलकर एक बड़े साम्राज्य में परिवर्तित हो गया। इस साम्राज्य का भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त प्रथम को जाता है। इनके पूर्वज श्री गुप्त और घटोत्कच संभवतः सामन्त (अधीनस्थ शासक) ही थे। चन्द्रगुप्त ने लिच्छवी राजकुमारी से विवाह करके अपने को सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से भी प्रभावशाली बनाया।

समुद्रगुप्त (335–375 ई0) – समुद्रगुप्त गुप्तवंश का सबसे प्रभावशाली शासक था इसके बारे में राजकवि हरिषेण द्वारा लिखित एक प्रशस्ति से जानकारी मिलती है। इसे प्रयाग प्रशस्ति भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त समुद्रगुप्त के बारे में एरण अभिलेख (मध्यप्रदेश) और विभिन्न प्रकार के सिक्कों आदि से भी जानकारी मिलती है।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त के सिक्के

गुप्त वंशावली		
श्री गुप्त	–	240–280इ०
घटोत्कच	–	280–319ई०
चन्द्रगुप्त प्रथम	–	319–335ई०
समुद्रगुप्त	–	335–375ई०
रामगुप्त	–	375–375ई०
चन्द्रगुप्त	–	375–415ई०
कुमारगुप्त	–	415–455ई०
स्कन्दगुप्त	–	455–467ई०

प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार

1. समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के शासकों को पराजित कर सीधा अपने नियंत्रण में ले लिया। इस क्षेत्र के नौ शासकों को इसने पराजित किया।
2. दक्षिण के बारह शासकों को समुद्रगुप्त ने पराजित कर समर्पण करने के लिए मजबूर किया। हालांकि इन राज्यों को पुनः स्वतंत्र कर दिया गया। ये समुद्रगुप्त के करद–राज्य थे। इनके द्वारा 'कर' के रूप में निश्चित उपहार प्रदान किया जाता था।
3. वन क्षेत्र के राजा जो आटविक प्रदेश के राजाके रूप में जाने जाते हैं। इनके क्षेत्र का विस्तार उत्तरप्रदेश के गाजीपुर से लेकर मध्यप्रदेश के जबलपुर तक था। इन राजाओं (जो संभवतः अपने कबीले के सरदार थे) को भी समुद्रगुप्त ने अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया इन्हें सेवक या परिचारक का दर्जा प्रदान किया गया। इनके साथ समुद्रगुप्त ने अपेक्षाकृत नरम व्यवहार किया।
4. भारत के सीमावर्ती राज्यों ने भी 'उपहार एवं राजनिष्ठा' का प्रमाण देकर समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण किया। इन राज्यों में पूर्व की ओर कामरूप (असम), बंगाल का

© BSTBPC WEBCOPY : NOT TO BE PUBLISHED

कुछ भाग और नेपाल, उत्तर पश्चिम की ओर मालवा, अर्जुनायन, यौधेय, आंभीर, आदि कई गणसंघ शामिल थे। ये शासक उपहार प्रदान करते थे, राजा की आज्ञाओं का पालन करते थे एवं दरबार में भी उपस्थित होते थे।

5. बाहरी क्षेत्रों के शासक जो शायद शकों एवं कुषाणों के वंशज एवं सिंहल प्रदेश के शासक थे। इन सबों ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की तथा वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। इनकी विदेश नीति पर समुद्रगुप्त का प्रभाव था।

इस तरह आप देखते हैं कि समुद्रगुप्त ने उपरोक्त विजित प्रदेशों के लिए अलग–अलग नीतियाँ अपनाई। जहाँ इसने आर्यावर्त्त (उत्तर भारत) के राज्यों को सीधा अपने नियंत्रण में लिया, वहीं दूर के राज्यों एवं आटविक प्रदेश के साथ नरम व्यवहार किया। जो उसकी बुद्धिमत्ता का सूचक है, क्योंकि उस सयम संपूर्ण भारत पर सीधा नियंत्रण स्थापित करना आसान नहीं था।

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC
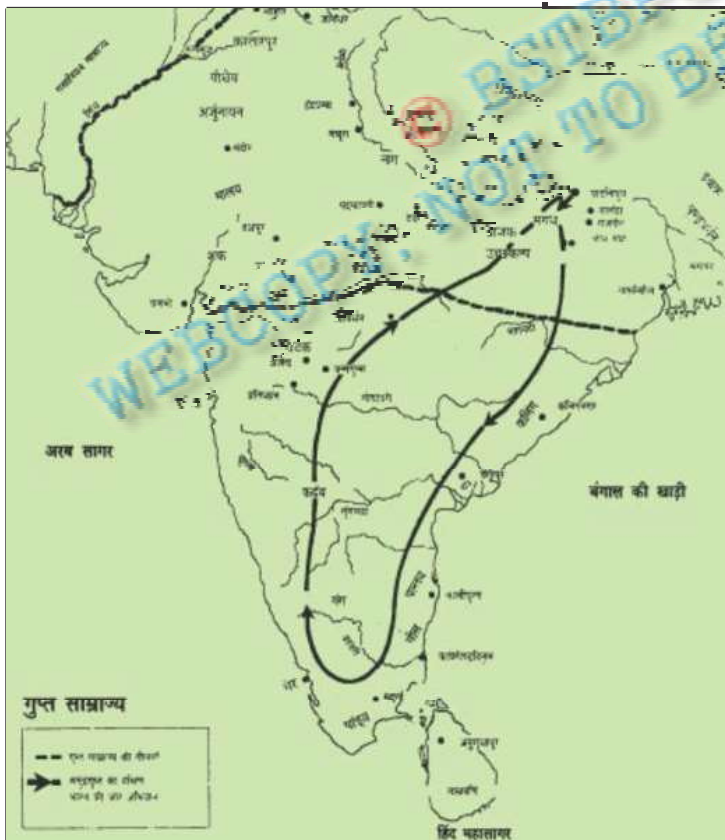
आप सोचिए ! संपूर्ण भारत पर सीधा नियंत्रण स्थापित करना समुद्रगुप्त के लिए आसान क्यों नहीं था ?

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375–415ई0)

समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त को हटाकर इसका योग्य पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना। इसने शक आक्रमणकारियों से साम्राज्य की रक्षा की।

समुद्रगुप्त के साम्राज्य विस्तार का मानचित्र

चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा गद्दी पर इस तरह अधिकार जमाया गया— शकों के द्वारा जब साम्राज्य के लिए संकट उत्पन्न किया गया तो रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को सौंपने का निश्चय किया। क्योंकि शकाधिपति ध्रुवदेवी की सुन्दरता पर आसक्त थे। चन्द्रगुप्त द्वितीय रामगुप्त की कायरता पर काफी क्षुब्ध हुआ। इसने ध्रुवदेवी का वेष धारणकर शक शिविर गया और शकाधिपति की हत्या कर दी। इसके बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय ने रामगुप्त की भी हत्या कर दी और गद्दी पर कब्जा करके ध्रुवदेवी से विवाह कर लिया।

दिल्ली के मेहरौली स्थित लौह स्तंभ में 'चन्द्र' नाम के जिस शासक का उल्लेख मिलता है उसे चन्द्रगुप्त द्वितीय ही समझा जाता है। इस लेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय को एक वीर राजा के रूप में याद किया गया है जिसने पूर्व में बंगाल और पश्चिम में बलूचिस्तान तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। इसने पश्चिमी भारत में (समुद्रगुप्त के बाद) पुनः अभियान चलाकर गणराज्यों के अस्तित्व को समाप्त कर डाला।

मेहरौली का लौह स्तंभ

चन्द्रगुप्त द्वितीय का समय शक्ति और समृद्धि का सूचक था। इसने पहले अभियान में पश्चिमी भारत (मालवा, गुजरात एवं सौराष्ट्र) पर विजय प्राप्त की। इस विजय के फलस्वरूप खम्भात एवं सोपारा के बन्दरगाह गुप्तों के नियंत्रण में आ गए।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त की शादी दक्षिण भारत के वकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय से की, जिसके कारण राजनीतिक एवं सामरिक रूप से यह बहुत प्रभावशाली हो गया। पश्चिमी शकक्षत्रप रूद्रसिम्हा तृतीय को इसने 395 ई0 में पराजित किया तथा बंग(बंगाल) को भी जीता। इसने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी से पूर्वी समुद्रों(अरब सागर से बंगाल की खाड़ी) तक किया। इसकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि राजधानी को पाटलिपुत्र के अतिरिक्त उज्जैन को दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित करनी थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में साहित्य कला, विज्ञान एवं संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की गईं। (इसे अगले अध्याय में विस्तार से पढ़ेंगे) चीनी यात्री फाहियान इसी के समय भारत आया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विदेशों से भी व्यापारिक संबंध स्थापित किए एवं बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के भी जारी किए।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC
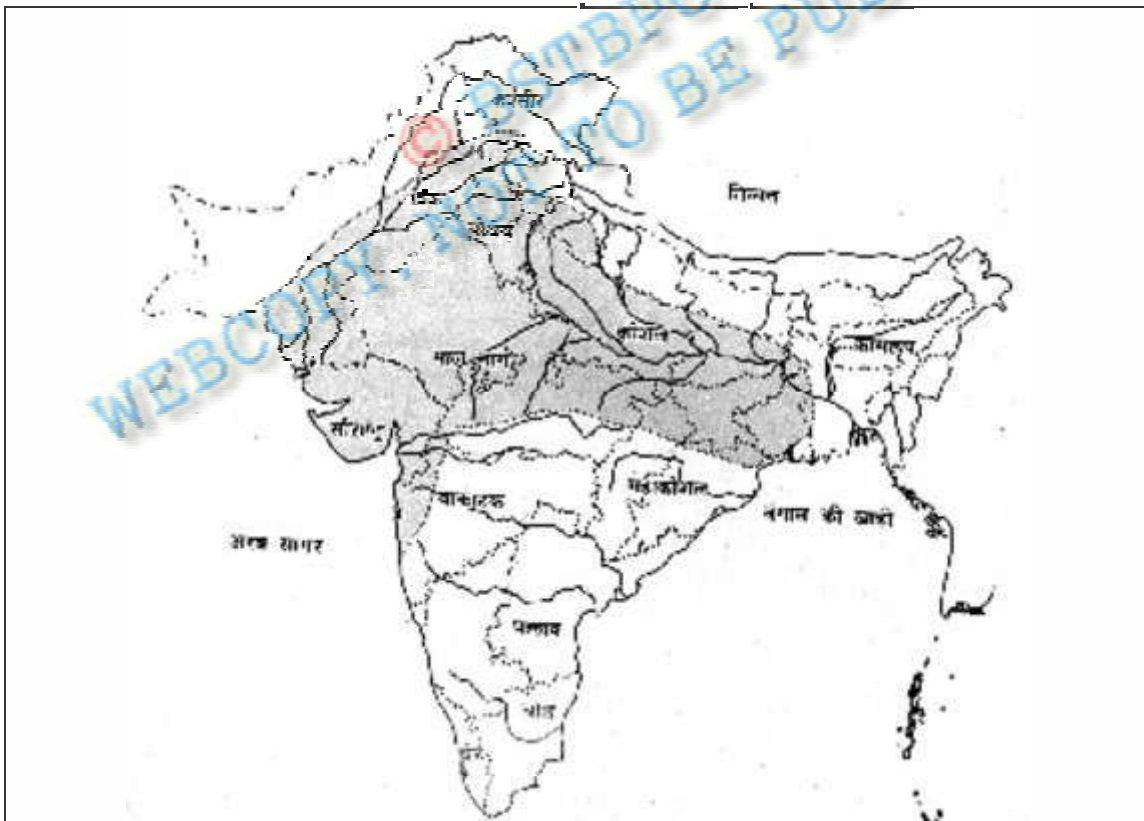
चन्द्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य विस्तार का मानचित्र

कुमारगुप्त (415–455ई0)

चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद इसका पुत्र कुमार गुप्त शासक बना। इसके शासन काल में शिक्षा के महान् केन्द्र नालन्दा महाविहार की स्थापना की गई। कुमारगुप्त का शासनकाल अपेक्षाकृत शांत था लेकिन अंतिम समय में इसे पुष्यमित्रों के आक्रमण का सामना करना पड़ा था।

स्कंदगुप्त (455–467ई0)

कुमारगुप्त के बाद स्कंदगुप्त शासक बना। जब वह पुष्यमित्रों को पराजित कर लौटा तो पिता की मृत्यु का समाचार मिला। उसी समय उत्तर–पश्चिम प्रांत से हुणों के आक्रमण शुरू हो गए। इसने हूणों को भी पराजित किया और शक्रादित्य की उपाधि धारण की।

स्कंदगुप्त के बाद गुप्त शासक हूणों के आक्रमण का सफलता पूर्वक सामना नहीं कर सके। साम्राज्य धीरे–धीरे कमजोर होने लगा, हूणों के लगातार आक्रमण के कारण गुप्त शासक अपने विस्तृत साम्राज्य को संगठित नहीं रख सके और अंततः इसका पतन हो गया।

पुष्यमित्र – पुष्यमित्र कौन थे ? कहाँ के थे? इस संबंध में स्पष्ट जानकारी का अभाव है। शायद यह नर्मदा नदी के किनारे वसा हुआ एक समुदाय था।

हूण – हूणों का साम्राज्य पर्शिया से खोतान तक फैला हुआ था। इसकी राजधानी अफगानिस्तान में वामियान थी। प्रथम हूण शासक जिसने भारत की ओर रूख किया वह तोरमान था। चीनी यात्री कहते हैं कि इसका पुत्र मिहिर कुल बौद्ध धर्म के प्रति घृणा का भाव रखता था। इसने कई बौद्ध भिक्षुओं की हत्या कर दी और अनेक बौद्ध विहार नष्ट किए। यह संभवत शैव धर्म का अनुयायी था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गुप्तों का प्रशासन कैसा था

गुप्तों ने एक प्रभावशाली शासनतंत्र की स्थापना की। इन्होंने आर्थिक सम्पन्नता एवं

सैनिक ताकत के बल पर समूचे उत्तर भारत पर राजनैतिक नियंत्रण स्थापित किया। शासन का प्रधान राजा था जो प्रजा को सुरक्षा और न्याय प्रदान करने के साथ धर्म को भी संरक्षण देता था। उसकी सहायता के लिए मंत्री और अमात्य (अधिकारी) होते थें। राज्य की आमदनी का मुख्य स्रोत लगान था। राज्य की समस्त भूमि राजा की सम्पत्ती मानी जाती थी। अतः उपज का एक तिहाई (1/3) भाग पर उसका अधिकार था, और यही लगान की राशि थी। राजा द्वारा अधिकारियों को भूमि प्रदान की जाती थी। इसके अलावा समुद्रगुप्त ने कई पराजित राजाओं को उनके क्षेत्र लौटा कर उन्हें कर देने पर बाध्य किया था। कर देने वाले यह शासक और भूस्वामी अधिकारी **सामंत** कहलाते थे। मौर्य शासकों के केन्द्रीयकृत प्रशासन के विपरीत गुप्तों का शासन सामंती और विकेन्द्रीकृत स्वरूप रखता था। आगे चलकर यह साम्राज्य के पतन का कारण भी बना।

साम्राज्य की सबसे बड़ी इकाई को देश कहा जाता था। दूसरी प्रादेशिक इकाई को भुक्ति कहा जाता था। उस समय मगध का उल्लेख भुक्ति के रूप में मिलता है। भुक्ति के पदाधिकारी उपरिक कहलाते थे। इसके नीचे की इकाई विषय संभवतः जिले के रूप में थी जिसके पदाधिकारी को विषयपति कहा जाता था। सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

कुमारामात्य	–	**प्रदेश का गर्वनर**
महासंधिविग्रहिक	–	**युद्ध एवं शांति का मंत्री**
महादण्डनायक	–	**मुख्य न्यायाधीश**

सीनीय प्रशासन में नगर श्रेष्ठी (शहर का बैंकर या शहर का व्यापारी) सार्थवाह यानी व्यापारियों के काफिले का नेता प्रथम कुलिक अर्थात मुख्य शिल्पकार प्रथम कायस्थ यानि लिपिकों के प्रधान जैसे लोग महत्वपूर्ण भूमिका में होते थे। ग्राम का प्रधान ग्रामिक कहलाता था जिसका चुनाव ग्राम समिति के लोग करते थे । नगरपति शहर के प्रशासन का प्रधान होता था।

इसे भी जानें

गुप्त साम्राज्य के पतन से हर्ष के उत्थान तक उत्तर भारत में चार राज्य काफी शक्तिशाली स्थिति में थे।

1. **मगध के गुप्त (इनका गुप्तवंश से कोई संबंध नहीं था)**
2. **कन्नौज के मौखरी**
3. **थानेश्वर के पुष्यभूति–पूर्व में उल्लिखित पुष्यभूति से इनका कोई संबंध नहीं था।**
4. **वल्लभी के मैत्रक**

हर्षवर्द्धन

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद पुष्यभूति वंश सबसे शक्तिशाली अवस्था में रहा इनकी राजधानी थानेश्वर में थी, और इनका पहला महत्त्वपूर्ण शासक प्रभाकरवर्द्धन था। हषवर्द्धन का राज्यारोहण 606 ई० में संकटपूर्ण परिस्थिति में हुआ। जब बंगाल के शासक शशांक ने पुष्यभूति वंश को कमजोर कर दिया था। परंतु हर्ष ने अपनी प्रतिभा से इस वंश को मजबूत और स्थिर बनाया। इसने सफल सैनिक अभियानों द्वारा पंजाब से बंगाल तक साम्राज्य विस्तार किया। कुछ इतिहासकारों के अनुसार कामरूप (असम) और कश्मीर के शासक भी उसकी अधीनता स्वीकार करते थे। हर्ष ने नर्वदा के दक्षिण में भी साम्राज्य विस्तार करना चाहा लेकिन चालुक्य वंश के शासक पुलकेशिन द्वितीय ने उसे पराजित किया।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

इसे भी जानें

हर्ष के संदर्भ में हमें उसके राजकवि वाणभट्ट की कृति हर्षचरित, मधुवन वांसखेड़ा और संजान ताम्रपत्र लेख एवं ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत आदि से जानकारी मिलती है।

हर्ष का झुकाव बौद्ध धर्म की ओर था। लेकिन वह अन्य धर्मावलम्बियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करता था। इसने कई स्तूप, बौद्ध विहार एवं कुछ अस्पतालों का निर्माण भी

करवाया। इसने कन्नौज में पाँचवीं बौद्ध–संगीति का आयोजन 643 ई0 में करवाया। इसमें लगभग 20 राजाओं सहित हजारों तीर्थयात्री एवं विद्वान शामिल हुए। ह्वेनसांग इस सभा का मुख्य अतिथि था। हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई।

क्या आप जानते हैं

ह्वेनसांग एक चीनी यात्री था, जिसने हर्ष के साम्राज्य का भ्रमण किया था। इसने हर्ष के प्रशासन एवं आमलोगों के जीवन का विस्तृत वर्णन अपने यात्रा वृतांत में किया है। हर्ष को ह्वेनसांग ने बौद्ध धर्म का महान् उपासक बताया। लेकिन वह शिव और सूर्य का भी उपासक था।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED
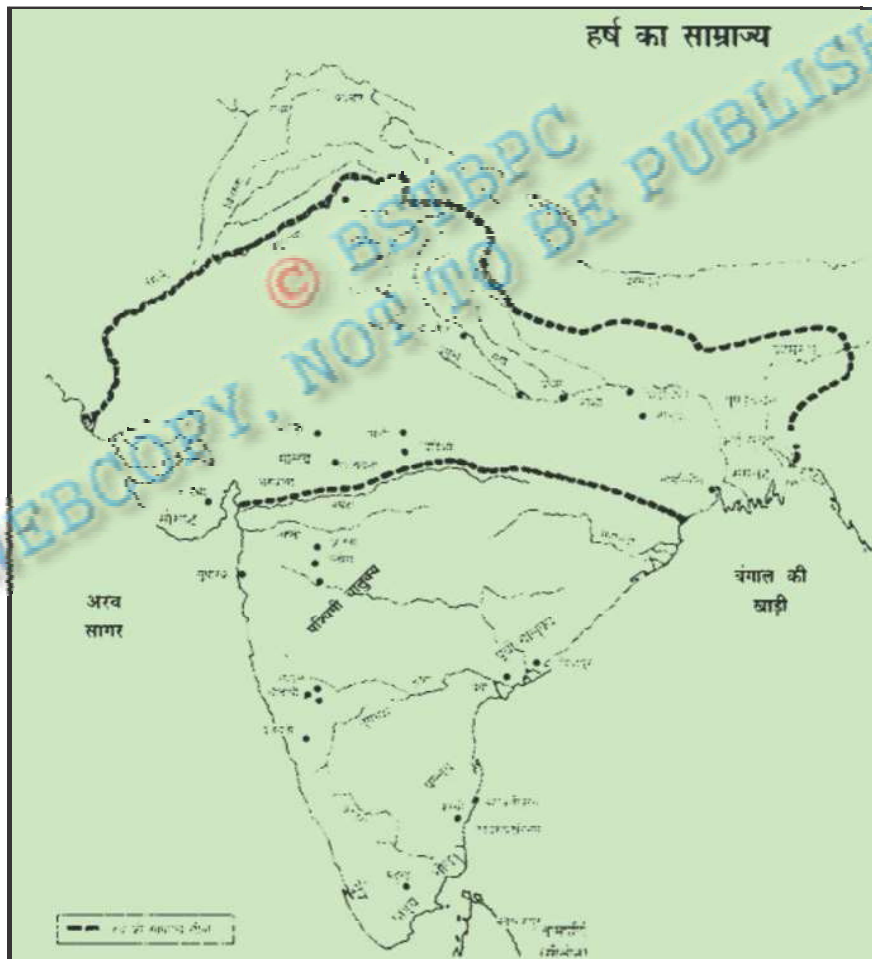
हर्ष के साम्राज्य का मानचित्र

पल्लव एवं चालुक्य (550–750ई0)

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद लगभग दो सौ वर्षो तक उत्तर–भारत में हर्ष को छोड़कर कोई महत्वपूर्ण राजा नहीं हुआ। इस काल में राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र दक्षिण भारत के दो प्रमुख राजवंश वातापी के चालुक्य और काँची के पल्लव हुए।

वातापी के चालुक्य

इस वंश का प्रथम प्रतापी राजा पुलकेशिन प्रथम हुआ। पुलकेशिन द्वितीय इस वंश का सबसे महान् राजा था। 611 ई0 में पुलकेशिन द्वितीय ने गद्दी पर बैठने के साथ ही आंतरिक समस्याओं का सामना किया। इन समस्याओं से निपटने के बाद इसने दक्षिण के राज्यों कदम्ब, गंग, कोंकण के मौर्य को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। इसके बाद इसने पुरी, मालवा और गुजरात के राजा को भी पराजित कर अपने अधीन किया। पुलकेशिन की सबसे बड़ी विजय हर्ष के विरूद्ध थी जो दक्षिण की ओर अपने साम्राज्य को बढ़ाना चाहता था। (इसकी चर्चा पहले भी की गई है) हर्ष पर विजय के बाद उत्तरापथस्वामी की उपाधि धारण की। पुलकेशिन द्वितीय अब काँचीपुरम (काँची) के पल्लवों को भी जीतना चाहता था। इस समय पल्लव शासक नरसिंह वर्मन था जिसने पुलकेशिन द्वितीय को पराजित किया। नरसिंह वर्मन ने वातापी (बादामी–आंध्रप्रदेश) को भी जीत लिया। पुलकेशिन द्वितीय युद्ध करते हुए मारा गया।

इसे भी जानें

परमेश्वर पुलकेशिन द्वितीय के बारे में जानकारी हमें अभिलेखों एवं साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त होती है। इसके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित एहोल अभिलेख से हर्ष पर विजय के संदर्भ में जानकारी मिलती है।

पल्लव

दक्षिण भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में पल्लवों का विशेष स्थान है। इन्होंने छठी सदी में अपनी राजधानी कांचीपुरम में स्थापित की। इनका प्रभुत्व तमिल क्षेत्र के उत्तरी भाग में नौवीं सदी तक कायम रहा। अपने साम्राज्य के उत्तर में अवस्थित चालुक्यों एवं दक्षिण में चोलों एवं पांड्यों के साथ इनका सदैव संघर्ष होता रहा।

अरब सागर

बंगाल की खाड़ी

ताम्रपर्णि (सीलोन)

दक्षिण भारत
320-800 ई.

हिंद महासागर

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED
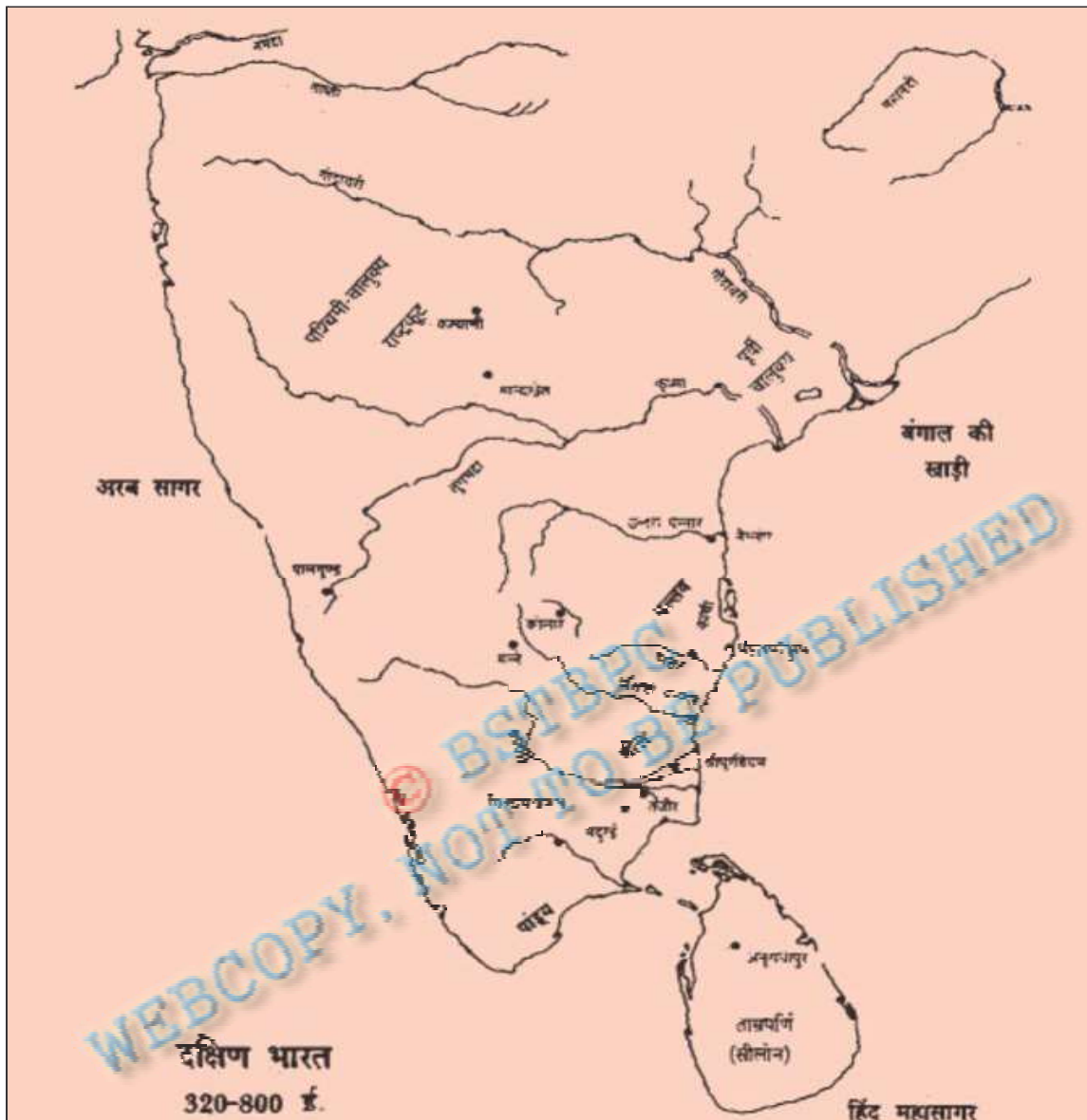
पल्लव एवं चालुक्यकालीन भारत का मानचित्र

पल्लवों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम (600—630) हुआ। चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित किया था।

महेन्द्रवर्मन का पुत्र नरसिंहवर्मन एक महान योद्धा था। इसने अपने पिता के पराजय का बदला लिया। पुलकेशिन द्वितीय को पराजित कर इसने 'वातापीकोण्ड' की उपाधि धारण की।

रथमंदिर

पल्लवों की सांस्कृतिक उपलब्धि

पल्लवों को द्रविड़ शैली के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। पल्लव कालीन वास्तुकला के उदाहरण इनकी राजधानी कांचीपुरम् एवं महाबलीपुरम् में पाये जाते हैं। पल्लवों ने वास्तुकला को काष्ठ और कन्दरा कला से मुक्त किया। इनके समय में मंदिर निर्माण की चार शैलियों का विकास हुआ। इनमें रथ शैली के मंदिर महाबलीपुरम् में बने हैं जो देखने में रथ की तरह लगते हैं। अन्य शैलियों में तटीय मंदिर और कांची के कैलाशनाथ मंदिर महत्वपूर्ण हैं जो स्थापत्य कला के असाधारण नमुने हैं।

कैलाशनाथ मंदिर

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

क्या आप जानते हैं

काष्ठ कला – मंदिर निर्माण या वास्तुकला के विविध रूपों में लकड़ी के प्रयोग की प्रधानता रहती है। इस कला में मंदिरों के दीवार, बीम एवं छत के निर्माण में लकड़ी को अलंकृत कर इस्तेमाल किया जाता है।

द्रविड़ शैली– द्रविड़ शैली के मंदिर दक्षिण भारत (कृष्णा नदी के दक्षिण) में पाये जाते हैं। इसमें मंदिर का आधार आयताकार तथा शिखर गर्भगृह के ऊपर अनेक खण्डों में बना होता है। ऊपर का प्रत्येक खण्ड क्रमशः अपने नीचे के खण्ड से छोटा होता है। शीर्षभाग में गुम्बद के आकार की कई स्तूपिकाएँ होती हैं। आगे चलकर मंदिर के साथ–साथ स्तंभ युक्त मंडप, गलियारा तथा गोपुरम् (प्रवेश द्वार) बनाए।

पल्लवों ने संस्कृत एवं तमिल भाषा को भी संरक्षण प्रदान किया महेन्द्रवर्मन स्वंय एक महान् विद्वान था। पल्लवों के समय वैष्णव संत (भगवान विष्णु में आस्था रखनेवाले) वैष्णवसंत एवं शैवसंतों (शिवभक्त) को भी सम्मान प्रदान किया गया।

आगे चलकर दक्षिण भारत में चोलों ने पल्लवों का और दक्षिणापथ में चालुक्यों का स्थान राष्ट्रकूटों ने ले लिया।

दक्षिण भारत के राज्यों में स्थानीय स्वशासन–उस समय के ऐतिहासिक स्रोतों से हमें स्थानीय स्वशासन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। ग्रामीण स्तर पर तीन तरह के संगठन थे–उर, सभा एवं नगरम। उर के सदस्य सामान्यतः प्रभावशाली वयक्ति होते थे। इसे ब्राह्मण भू–स्वामियों का संगठन भी कहा जाता था।

सभा कई उपसमितियों में विभक्त थी, जिनका कार्य सिंचाई का साधन विकसित करना, खेती–बाड़ी से जुड़े विभिन्न कामों को देखना, सड़क–निर्माण करना, स्थानीय मंदिरों की देखरेख करना, शिक्षण संस्थानों एवं बाजार की व्यवस्था करना मुख्य कार्य था। नगरम् व्यापारियों का संगठन था। इस पर शक्तिशाली भू–स्वामियों और व्यापारियों का नियंत्रण था। ये संस्थाएँ आगे की शताब्दियों में और शक्तिशाली हो गई थीं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

नालन्दा महाविहार

आप पिछले अध्यायों में पढ़ चुकें होंगे कि प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरूकुल में कैसे शिक्षा ग्रहण करते थे और अपने ज्ञान के द्वारा समाज को कैसे सही रास्ता दिखाते थे। धीरे–धीरे यह ज्ञान ब्राह्मणों एवं मंदिरों के प्रांगण तक सीमित हो गया। ज्ञान पर धर्म एवं कर्म पर अंधविश्वासों का प्रभाव बढ़ गया। ऐसी परिस्थिति में नालंदा विक्रमशिला एवं उद्वन्तपुरी (बिहारशरीफ) में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना हुई। इनमें नालंदा महाविहार का विशेष स्थान है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED
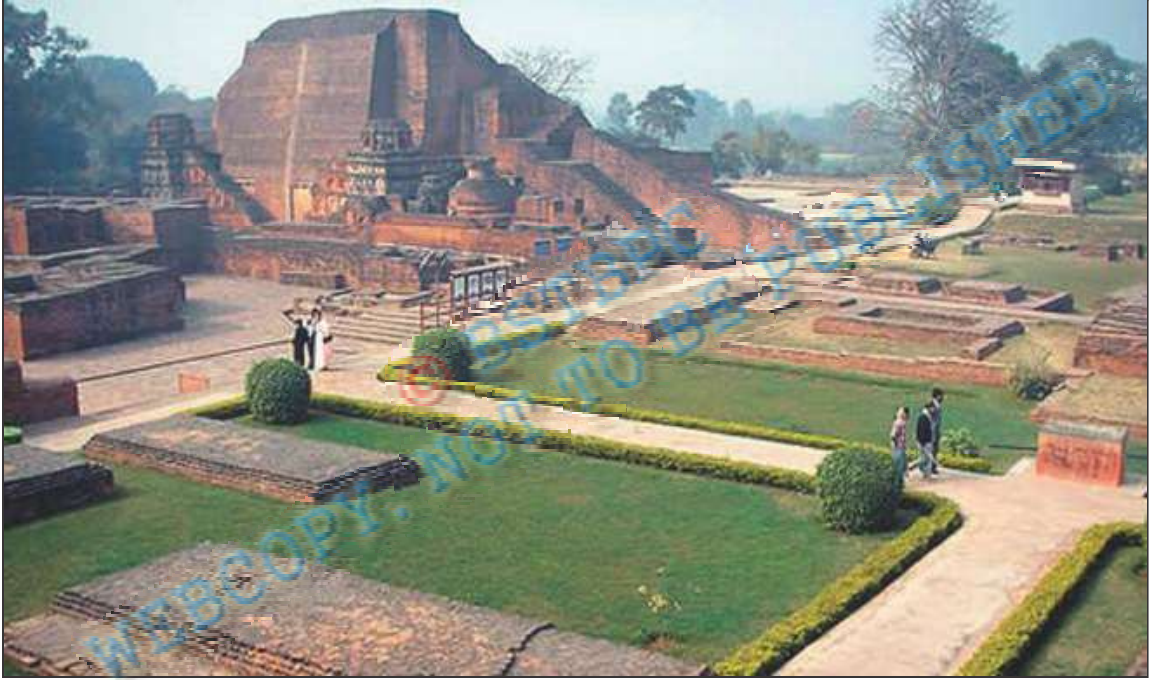
नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा दक्षिण बिहार में राजगृह के निकट स्थित हैं इसके अवशेष मुख्य भवन के अतिरिक्त बड़गाँव–बेगमपुर आदि गाँवों में दूर–दूर तक बिखरे हुए हैं। नालन्दा विश्वविद्यालय के संबंध में जानकारी के मुख्य स्रोत ह्वेनसांग का विवरण एवं इसके अवशेष (आज भी विद्यमान) हैं। इत्सिंग ने भी यहाँ 10 वर्ष बिताये थे। चीनी यात्रियों के विवरण से पता चलता है कि यहाँ हजारों की संख्या में शिक्षक और छात्र रहते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय की आय का मुख्य स्रोत अनुदान में मिले लगभग 200 गाँव थे। इसके

अतिरिक्त इन्हें कुछ राजकीय अनुदान एवं विदेशी सहायता भी मिलती थी।

नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए प्रवेश पाना काफी कठिन था। अध्ययन के लिए देश–विदेश से छात्र आते थे। छात्रों से उनकी विशेषज्ञता के विषय से संबंधित सवाल पूछे जाते थे, जिससे उनके ज्ञान एवं आचरण की परीक्षा हो जाती थी। विश्वविद्यालय एवं छात्रावास दोनों में दिनचर्या नियमित एवं व्यवस्थित ढंग से होती थी। ह्वेनसांग जब शिक्षा ग्रहण करने आए उस समय यहाँ के अध्यक्ष आचार्य शीलभद्र थे।

विश्वविद्यालय में सुबह से शाम तक शैक्षाणिक कार्य चलते रहते थे। संगोष्ठी प्रणाली की तरह छात्र शिक्षकों से प्रश्न पूछते थे एवं विचार–विमर्श भी करते थे। उस समय लगभग सभी विषयों की शिक्षा वहाँ दी जाती थी, जिसमें ब्राह्मण और बौद्ध धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष, दार्शनिक एवं व्यवहारिक तथा विज्ञान एवं कला से संबंधित विषय महत्वपूर्ण थे। लेकिन विशेष बल विभिन्न पंथों, वेदों (अथर्ववेद विशेषरूप से) सांख्य, संस्कृत व्याकरण एवं महायान बौद्ध धर्म पर दिया जाता था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही उपाधि (डिग्री) प्रदान की जाती थी।

नालन्दा विश्वविद्यालय की एक समृद्ध लाइब्रेरी भी थी जिसकी इमारत बहुमंजिली थी। नालन्दा विश्वविद्यालय को गुप्त शासकों, हर्षवर्द्धन एवं पालशासकों के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था, लेकिन 11–12वीं सदी में संरक्षण के अभाव एवं आर्थिक स्रोतों में कमी के कारण नालन्दा विश्वविद्यालय की शैक्षाणिक स्थिति में गिरावट देखने को मिलती है। ऐसा कहा जाता है कि बंगाल विजय के क्रम (1197–1203ई0) में बख्तियार खिलजी ने नालन्दा को नष्ट कर दिया था एवं पूरी संस्था को जला दिया था। लेकिन साक्ष्यों के अभाव एवं अन्य साहित्यिक स्रोतों के आधार पर इस विचार धारा को अमानय कर दिया गया है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

आओ याद करें :

सही उत्तर चुनें / सही पर निशान (✓) लगाएं।

1. समुद्रगुप्त की प्रशस्ति किसने लिखी?

   (क) रविकीर्ति　　(ख) हरिषेण

   (ग) कालिदास　　(घ) अमरसिंह

2. हर्षवर्धन किस वंश का राजा था?

   (क) गुप्तवंश　　(ख) मौर्यवंश

   (ग) पुष्यभूति　　(घ) मौखरी वंश

3. मेहरौली के लौह स्तंभ से किस राजा के बारे में जानकारी मिलती है?

   (क) हर्षवर्धन　　(ख) चन्द्रगुप्त द्वितीय

   (ग) चन्द्रगुप्त मौर्य　　(घ) चन्द्रगुप्त प्रथम

4. नालन्दा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रवेश कैसे मिलता था?

   (क) राजा के कहने पर　　(ख) सवाल पूछकर ;जांच परीक्षा द्वारा

   (ग) पैसा लेकर　　(घ) राजा के कर्मचारियों को

5. एहोल अभिलेख किस राजा की प्रशस्ति है?

   (क) नरसिंह वर्मन　　(ख) पुलकेशिन द्वितीय

   (ग) हर्षवर्धन　　(घ) समुद्रगुप्त

आओ याद करें :

1. समुद्रगुप्त एवं पुलकेशिन द्वितीय की प्रशस्ति के बारे में तीन–तीन पंक्ति लिखें।
2. हर्ष के बारे में हमें किन स्रोतों से जानकारी मिलती है?हर्ष के बारे में पांच पंक्ति लिखें।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

3. पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को क्यों पराजित किया?इसकी जानकारी हमें कैसे मिलती है?

आओ करके देखें

4. समुद्र गुप्त ने जीते हुए राज्यों (राजाओं) के साथ अलग–अलग नीतियों को क्यों अपनाया। वर्ग में अलग–अलग समूह बनाकर चर्चा करें और प्रत्येक ग्रुप, दो–दो कारणों को ढूंढें।
5. समुद्रगुप्त के सिक्के को देखकर जैसा कि पुस्तक में दिया हुआ। यह जानने की कोशिश करो कि उसके अन्दर कौन–कौन गुण थे।
6. दक्षिण भारत के राजवंशों के बारे में लिखो। उनका ग्राम प्रशासन कैसे चलता था? क्या आपके गाँव या शहर में भी वैसी व्यवस्था है?
7. आप अपने पिताजी की मदद से / परिवार के किसी सदस्य की मदद से परिवार या पड़ोस के एक परिवार की पांच पीढ़ी के सदस्यों का नाम लिखें।
8. राजा के लिए सेना क्यों आवश्यक था? सेनाओं के राजा के साथ चलने से कौन–कौन सी लाभ एवं हानियां थी। वर्ग में समूह बनाकर चर्चा करें ।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED